4

भारतीय मंदिरों की *मूर्तिकला*

(चौथी शताब्दी पूर्व से बारहवीं शताब्दी पूर्व तक)

Temple Art and Sculpture

(From 4th Century AD to 12th Century AD)

4.0 भूमिका

प्राचीन और मध्यकाल में भारतीय मूर्तिकला मुख्य रूप से मंदिरों को सजाने के लिए होती थी। ईंटों तथा पत्थरों से मंदिरों का निर्माण गुप्त काल से ही शुरू हुआ था परन्तु इस तरह के कुछ छोटे–छोटे मंदिर पहले भी बने थे। आठवीं शताब्दी में भारत में कई मंदिरों का निर्माण हुआ। पूर्वी भारत में पाल राजाओं ने, दक्षिण भारत में चोला तथा पल्लव राजाओं ने, मध्य भारत में राष्ट्रकूट तथा चान्दल्य राजाओं ने अपने–अपने राज्य में कई बहुत सुंदर मंदिरों का निर्माण किया। यह क्रम आठवीं से दसवीं शताब्दी तक चलता रहा। इसके पश्चात ग्यारहवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक कुछ क्षेत्रीय शासकों ने अपने–अपने क्षेत्रों में मंदिरों का निर्माण किया। इनमें विजयनगर, मैसूर, बंगाल तथा उड़ीसा उल्लेखनीय हैं।

इस पाठ में इन मंदिरों में अलंकृत मूर्तिकलाओं के बारे में जानकारी दी जाएगी। निम्नलिखित चार विख्यात मूर्तियों की चर्चा एवं उनका वर्णन किया जाएगा।

(क) एलिफेंटा की त्रिमूर्ति (मुम्बई के समीप)

(ख) एलोरा की महिषासुर मरदिनी (महाराष्ट्र)

(ग) खजुराहो का कांडिर्यमहादेव मंदिर (मध्यप्रदेश)

4.1 उद्देश्य

इस पाठ सामग्री के अध्ययन के बाद आप

- दिए गए मंदिरों तथा मूर्तियों का संक्षिप्त वर्णन कर सकेंगे;
- दिए गए मंदिरों तथा मूर्तियों के निर्माण स्थान तथा राज्यों के नाम बता सकेंगे;
- इन मंदिरों तथा मूर्तियों के निर्माण का माध्यम तथा समय शैली और वास्तुकला की रीति के बारे में भी बता सकेंगे;
- इन मूर्तियों को आसानी से पहचान सकेंगे;
- इन मंदिरों की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे।

Sculpture of Devi at Ellora

4.2 महिषासुर मरदिनी

शीर्षक	–	*महिषासुर मरदिनी*
माध्यम	–	*पत्थर काट कर*
समय	–	*8 वीं शताब्दी*
शैली	–	*राष्ट्रकूट*
स्थान	–	*कैलास मंदिर, एलोरा, महाराष्ट्र*

सामान्य परिचय

इस मूर्ति में महिषासुर को देवी दुर्गा द्वारा मारते हुए दर्शाया गया है। राष्ट्रकूट राजा द्वारा एक खंड पत्थर को काट कर बनाया गया विशाल शिवजी का मंदिर (कैलाश मंदिर) संसार के कला इतिहास में एक विशेष स्थान रखता है। इस मंदिर को अनेक सुंदर उभरी हुई मूर्तियों द्वारा सजाया गया है। हिन्दू धर्म ग्रन्थ की इस कहानी को कलाकार ने बहुत ही सुंदर रूप में दर्शाया है। भगवती द्वारा दुष्ट दमन की इस कहानी को भारतीय मूर्तिकला में एक प्रतिमान (आईकोन ICON) का रूप दिया गया है। देवी के मनोहारी रूप और शक्ति प्रदर्शन का संयोजन बहुत ही सुंदर रूप से हुआ है।

पाठगत प्रश्नः (4.2)

रिक्त स्थान पूर्ण करें।

(क) इस मूर्ति में .....को देवी दुर्गा द्वारा मारते हुए दर्शाया गया है।

(ख) महिषासुरमरदिनी मूर्ति .....में है।

(ग) यह मूर्ति .....वीं शताब्दी में .....शैली में बनाई गई थी।

त्रिमूर्ति

4.3 त्रिमूर्ति

शीर्षक	–	*त्रिमूर्ति*
माध्यम	–	*पत्थर काट कर*
समयकाल	–	*8वीं शताब्दी*
शैली	–	*राष्ट्रकूट*
आकार	–	*ऊँचाई, 5.20 मीटर*
स्थान	–	*एलिफेंटा, मुम्बई, महाराष्ट्र।*

सामान्य परिचय

सन्मुख भाग की मूर्ति का चेहरा सम्पूर्ण है परन्तु बाईं तथा दाईं दिशाओं की मूर्तियों के चेहरे प्रोफाइल (पार्श्व) में दिखाए गए हैं। इसमें शिव के तीन रूप–बाईं दिशा में **अघोरा** रूप, दाईं दिशा में **वामदेव** रूप तथा मध्य दिशा में **सदाशिव** रूप दिखाया गया है। वास्तव में हिन्दू धर्मानुसार तीन देवता–ब्रह्मा, विष्णु और शिव की सृष्टि, रक्षक तथा विश्वंसक के रूप इस प्रतिमा में शिव पर ही दर्शाए गए हैं।

पाठगत प्रश्न (4.3)

ठीक उत्तर छांट कर लिखें।

(क) त्रिमूर्ति प्रतिमा .....

(i) ब्रम्हा की है।

(ii) कृष्ण की है।

(iii) शिव की है।

(ख) इस प्रतिमा में मध्य भाग का चेहरा है .....

(i) रूद्र का

(ii) नटराज का

(iii) सदाशिव का

(ग) त्रिमूर्ति की बाईं दिशा के नाशकारी रूप को कहा जाता है .....

(i) अघोरा

(ii) वामदेव

(iii) महादेव

कांडिर्य महादेव का मंदिर

4.4 कांडिर्य महादेव का मंदिर

शीर्षक	–	*कांडिर्य महादेव का मंदिर*
माध्यम	–	*बलुआ पत्थर*
समयकाल	–	*10वीं शताब्दी, चान्दल्य शासन काल*
शैली	–	*बेशरा*
आकार	–	*ऊँचाई 101.9"*
स्थान	–	*खजुराहो, मध्यप्रदेश*

सामान्य परिचय

खजुराहो में कई मंदिर एक जगह पर बनाए गए हैं, जिनमें कांडिर्य महादेव मंदिर सबसे विशाल एवं सुंदर है। 'बेशरा' शैली में बनाए गए इस आलंकारिक में संतुलन देखने योग्य है। ऊँचे चबूतरों के चारों तरफ लम्बी पंक्तियों में मानवाकृतियाँ तथा पशु–पक्षियों की बहुत–सी सुंदर मूर्तियाँ बनाई गई हैं। मंदिर की दीवारों को बड़े–बड़े आकार की नारी, पुरूष और देवताओं की मूर्तियों से सजाया गया है। इन मूर्तियों में ऐसी कई मूर्तियाँ हैं, जिन्हें 'मिथुन–मूर्ति' कहा जाता है। मंदिर का बाहरी भाग खचाखच मूर्तियों द्वारा सजाया गया है परन्तु अन्दर की दीवारें सादी तथा खाली रखी गई हैं।

पाठगत प्रश्न (4.4)

रिक्त स्थान पूर्ण करें।

(क) यह मंदिर .....शैली का एक सुन्दरतम नमूना है।

(ख) इन मूर्तियों में ऐसी कई मूर्तियां हैं जिन्हें .....मूर्ति कहा जाता है।

(ग) मंदिर की अन्दर की दीवारें .....रखी गई हैं।

4.5 सारांश

गुप्त काल के पश्चात् जिन मूर्तियों की रचना हुई है, उनमें से अधिकांश मंदिर वास्तुकला से ही सम्बन्धित रहे। इन भवनों तथा मंदिरों को सजाने के लिए ही इन मूर्तियों की रचना हुई। प्राचीन भारत के मंदिरों की तीन वास्तुकला रीतियां थीं – उत्तर भारत की नागरा शैली, दक्षिण भारत की द्रविड़ शैली तथा मध्य भारत की बेशरा शैली। सभी में इस तरह की मूर्तिकला देखने को मिलती है।

4.6 पाठगत प्रश्न के उत्तर

4.2	(क)	महिषासुर	(ख)	एलोरा	(ग) 8, राष्ट्रकूट
4.3	(क)	शिव	(ख)	सदाशिव	(ग) अघोरा
4.4	(क)	बेशरा	(ख)	मिथुन	(ग) सादी तथा खाली

4.7 मॉडल प्रश्न

(1) एलोरा के कैलाश मंदिर की महिषासुरमरदिनी मूर्ति की विशेषतायें बताइए।

(2) मुम्बई के समीप एलिफेन्टा में त्रिमूर्ति की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(3) खजुराहो का कांडिर्य महादेव मंदिर प्रसिद्ध क्यों है?

4.8 शब्दकोश–

(1) आईकन – देव–देवी की मूर्ति जो सहजता से पहचानी जाती है।

(2) प्रोफाइल – पार्श्वगत चित्र